International Journal of Jyotish Research: 2023; 8(1): 48-51

ISSN: 2456-4427
Impact Factor: RJIF: 5.11
Jyotish 2023; 8(1): 48-51
© 2023 Jyotish
www.jyotishajournal.com
Received: 09-02-2023
Accepted: 13-03-2023

मंजू वर्मा
शोधार्थी, एस.ओ.एस.ज्योर्तिविज्ञान
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर,
मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. कमलेश माथुर
मार्गदर्शक, संस्कृत विभाग, शासकीय पी.जी.
महाविद्यालय, दतिया, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
मंजू वर्मा
शोधार्थी, एस.ओ.एस.ज्योर्तिविज्ञान
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर,
मध्य प्रदेश, भारत

फलित में द्वादशांशवर्ग कुण्डली पर विवेचना

मंजू वर्मा, डॉ. कमलेश माथुर

सारांश
ग्रहों के बलाबल विचार में वर्ग कुण्डली अत्यंत महत्वपूर्ण होती हैं। कोई ग्रह जितने अधिक वर्गों में शुभ स्थान पर विराजमान होता है वह उतना ही शुभफल दायक माना जाता है। द्वादशांश का सम्यक ज्ञान फल कथन में सहायक होता है। फल कथन में द्वादशांश वर्ग से माता-पिता के सुख, वियोनि जन्म, आयु निर्णय, भाग्य, कर्मठता, परोपकार की प्रवृत्ति, अशुभ कुम्भ का वर्ग इत्यादि से सम्बन्धित शुभाशुभ फलों का विचार किया जाता है। बृहज्जातकम्, सारावली, मानसागरी, फलदीपिका इत्यादि ग्रंथों में द्वादशांश फल कथन विवरण मिलता है।

कूट शब्द: वर्ग कुण्डली, द्वादशांश, द्विरसांश, सूर्यांश, वियोनि जन्म।

प्रस्तावना
फलित कथन में लग्न कुण्डली के साथ वर्ग कुण्डलियों का अध्ययन अनिवार्य रूप से किया जाता है। फलित कथन की सूक्ष्मता तथा काल निर्धारण में वर्ग कुण्डलियाँ अत्यन्त महत्वपूर्ण होती हैं। सामान्य रूप से सप्तवर्ग कुण्डलियों का प्रयोग चलन में है। विभिन्न प्रकार के सप्तवर्ग तथा उनका प्रयोजन निम्नानुसार है –

1. **लग्न:** जातक के समग्र कर्मों के फलादेश का संकेत
2. **होरा:** जातक के धन,साहस आदि की समीक्षा
3. **द्रेष्काण:** द्रेषकाण से रोग निदान एवं विभिन्न गुणों का विचार
4. **सप्तमांश:** पुत्रधन,प्रतिष्ठा,साहस,वीरता का विचार
5. **नवमांश:** नवमांश से विशेषकर दाम्पत्य जीवन एवं ग्रहों के बला बल को देखा जाता है।
6. **द्वादशांश:** माता-पिता का सौख्य, कर्मठता का विचार
7. **त्रिशांश:** अरिष्ट फल विचार

जातक ग्रंथों ने सप्तवर्ग कुण्डलियों में सभी वर्गों को समान महत्व नहीं दिया गया है। फल कथन में नवमांश को सर्वाधिक महत्व देते हैं और प्रायः अन्य वर्गों की समीक्षा कम ही की जाती है। होरा, द्रेष्काण, सप्तमांश, त्रिशांश के महत्व को दूसरे स्थान पर रखा जा सकता है। परंतु द्वादशांश वर्ग का उल्लेख तथा विचार अपेक्षाकृत बहुत ही कम देखा जाता है। मानसागरी व्याख्याकार: प्रो. डॉ रामचंद्र पाण्डेय, (प्रकाशक–कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, वर्ष 1983) के अनुसार

श्लोक -

सूर्य आत्मा मनश्चन्द्रस्तदात्मा जीवयोगवान्।
लग्नांशाद् द्वादशांशाद्वा ग्रहाणां फलमादिशेत्॥२६४॥

अर्थात - सूर्य आत्मा एवं चन्द्रमा मन है। इसी के योग से आत्मा जीव से युक्त होता है। लग्न के अंश (नवांश) या द्वादशांश से ग्रहों के फल को कहना चाहिए।
इस आलेख में विभिन्न जातक ग्रंथों में निरूपित द्वादशांश वर्ग कुण्डली प्रयोग सम्बन्धित नियमों का संक्षिप्तात्मक विवेचन, उपयोगीता व महत्ता को स्पष्ट किया है। जिससे द्वादशांश वर्ग सम्बंधित फल कथन की सूक्ष्मता का विचार किया जा सकेगा।

द्वादशांश वर्ग कुण्डली
एक वर्ष में भगवान भास्कर के द्वादश स्वरूप कहे गए हैं। इसी प्रकार द्वादश भावों के द्वादश वर्ग का भी निर्माण किया जाता है। इन द्वादश वर्गों को सूर्यांश कहते हैं।

स्युर्द्वादशांशानिजभद्विचन्त्याः[1] के अनुसार 30°अंशों में 12 का भाग देने से 2°30' प्राप्त होता है। अर्थात 2°30' का एक द्वादश वर्ग होता है। द्वादशांश का आरंभ अपनी ही राशि से होता है। अर्थात मेष के द्वादशांश वर्ग मेष से मीन तक होते हैं, वृष के द्वादशांश वृष से आरंभ हो कर मेष तक होते हैं, इत्यादि।

अर्थात - सूर्य आत्मा एवं चन्द्रमा मन है। इसी के योग से आत्मा जीव से युक्त होता है। लग्न के अंश (नवांश) या द्वादशांश से ग्रहों के फल को कहना चाहिए।

इस आलेख में विभिन्न जातक ग्रंथों में निरूपित द्वादशांश वर्ग कुण्डली प्रयोग सम्बन्धित नियमों का संक्षिप्तात्मक विवेचन, उपयोगीता व महत्ता को स्पष्ट किया है। जिससे द्वादशांश वर्ग सम्बंधित फल कथन की सूक्ष्मता का विचार किया जा सकेगा।

द्वादशांश वर्ग कुण्डली

एक वर्ष में भगवान भास्कर के द्वादश स्वरूप कहे गए हैं। इसी प्रकार द्वादश भावों के द्वादश वर्ग का भी निर्माण किया जाता है। इन द्वादश वर्गों को सूर्यांश कहते हैं।

स्युर्द्वादशांशानिजभद्विचन्त्याः[2] के अनुसार 30°अंशों में 12 का भाग देने से 2°30' प्राप्त होता है। अर्थात 2°30' का एक द्वादश वर्ग होता है। द्वादशांश का आरंभ अपनी ही राशि से होता है। अर्थात मेष के द्वादशांश वर्ग मेष से मीन तक होते हैं, वृष के द्वादशांश वृष से आरंभ हो कर मेष तक होते हैं, इत्यादि।

वर्ग का स्वामी ग्रह: टीकाकार आचार्य भटोत्पल्ल ने बृहज्जातकम् में स्पष्ट किया है कि यद्यस्यग्रहस्यक्षेत्रंराशिः स तस्य वर्गो। अर्थात जिस राशि में जो ग्रह हो वह उसका वर्ग कहलाता है। लघुजातकम् के अनुसार मेषा नवांशकानाम् अज मकर तुलाकुलीराद्याः॥८॥

अर्थात मेषादि राशियों के नवांशादि वर्गों के भी क्रमशः स्वामी मङ्गलादि ग्रह होते हैं।

द्विरसांश अर्थात द्वादशांश: द्वादशांश को जातक ग्रंथ द्विरसांश से भी सम्बोधित करते हैं। आयुर्वेद की मान्यताओं से भोजन में मधुर (मीठा), लवण (नमकीन), अम्ल (खट्टा), कटु (कड़वा), तिक्त (तीखा) और कषाय (कसैला) अनिवार्य छः प्रकार रस होते हैं। अतः संख्या 6 को रस संज्ञा से भी सम्बोधित करते हैं।इस प्रकार से द्विरसांश का तात्पर्य द्विरस अंश = 2 × 6 अंश = 12 अंश होता है।

अधि देवता: द्वादश वर्गों के अधि देवता क्रम से गणेश, अश्विनी कुमार, यम तथा सर्प हैं। *द्वादशांशस्य गणना तत्तत्क्षेत्राद्विनिर्दिशेत्। तेषामधीशाःक्रमशोगणेशाश्वियमाहयः*[3]॥ अर्थात 1-5-9 वर्ग के गणेश, 2-6-10 के अश्विनीकुमार, 3-7-11 के यम तथा 4-8-12 के सर्प अधि देवता है।

द्वादश वर्ग कुण्डली चक्र

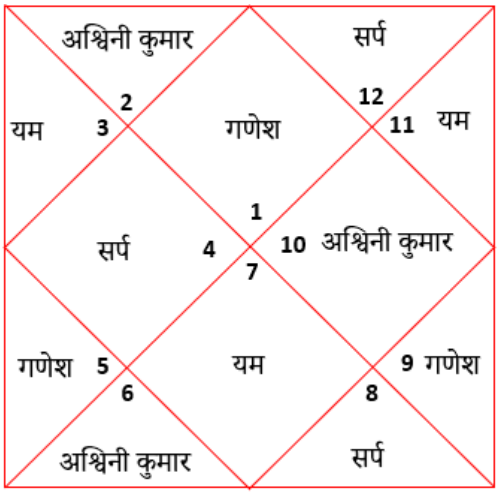

[1]भारतीय कुण्डली विज्ञान, श्री मीठालालहिंमतराम ओझा।

[2]भारतीय कुण्डली विज्ञान, श्री मीठालालहिंमतराम ओझा।

[3]मानसागरी के अध्याय 21 के अनुसार

द्वादशांश वर्ग कुण्डली चित्रण

लग्न कुण्डली के जैसे ही वर्ग कुण्डली चक्र को भी चित्रित किया जाता है। लग्न कुण्डली के प्रत्येक भाव में स्थित राशि के द्वादश वर्गों में से किसी एक वर्ग में ग्रह स्थित होता है। वस्तुतः हर भाव की अलग-अलग बारह कुण्डली का निर्माण होना चाहिए। परंतु ऐसा न करते हुए सुलभता लग्न के द्वादशांश वर्ग कुण्डली में ही अन्य सभी राशियों के वर्गों को भी समाहित कर लिया जाता है। यह प्रक्रिया केवल कुंडली अवलोकन के लिए है। इस एक वर्ग कुण्डली से ही सभी ग्रहों के वर्ग, उनके स्वामी ग्रह तथा देवता का ज्ञान हो जाता है।

उदाहरण के लिए 26 अप्रैल 1941 सूर्योदय 05:44:29 ग्वालियर की कुण्डली का चित्रण किया जा रहा है।

सूर्योदय काल के ग्रह स्पष्ट

ग्रह	भोगांश	लग्नराशि	द्वादशांश वर्ग
लग्न	0-11:07:43	1	5
सूर्य	0-12:19:60	1	5
चन्द्र	0-06:23:56	1	3
भौम	9-23:11:05	10	7
बुध	0-01:05:06	1	1
गुरु	0-29:47:23	1	12
शुक्र	0-14:04:51	1	6
शनि	0-23:18:29	1	10
राहु	5-07:02:22	6	9

लग्न कुण्डली

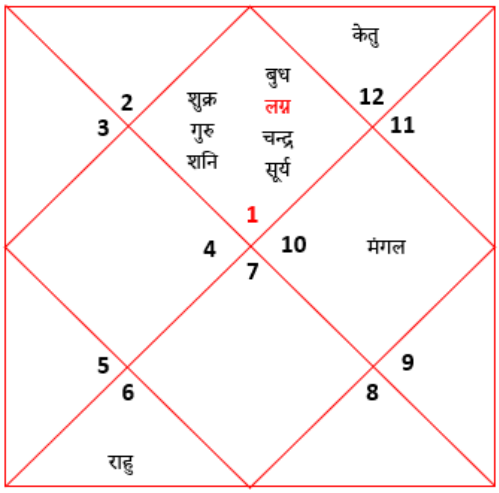

द्वादशांश कुण्डली

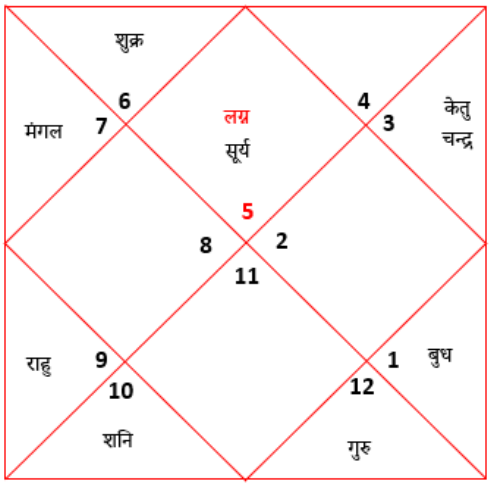

उदाहरण कुण्डली के दशम भाव में मकर राशि के 23:11:05 अंशादि पर मंगल स्थित हैं। यहाँ मंगल दसवें वर्ग में हैं (चूंकि 23.1847÷2.5 की लब्धि 9 +1=10)। मकर राशि का 10$^{वाँ}$ द्वादशांश तुला का वर्ग होता है। अतः मंगल तुला के द्वादश वर्ग में है। सिंह के वर्ग से आरंभ होने वाले द्वादशांशवर्ग कुण्डली में ही तुला के वर्ग में मंगल को स्थापित कर दिया गया है। इस वर्ग के अधि देवता अश्विनी कुमार हैं, तथा वर्ग के स्वामी शुक्र हैं।

सप्तवर्ग कोष्ठक में द्वादशांश

फलित कथन के समय ग्रहों के सप्तवर्ग कोष्ठक का भी अध्ययन किया जाता है। सप्तवर्ग कोष्ठक में जितने वर्गों में ग्रह उत्तम स्थान पर है वे उतना ही अधिक शुभ फल प्रदान करने वाले होते हैं।

षड्बल गणना में द्वादशांश

षड्बल साधन में भी सप्तवर्ग में ग्रहों की स्थिति के अनुसार अंक प्रदान किए जाते हैं। इस प्रकार के बल को सप्तवर्ग बल कहते हैं। सप्तवर्ग बल, स्थान बल का एक घटक है। सप्तवर्ग में स्व-वर्ग में स्थित ग्रहों को 30 षष्ट्यंश, अतिमित्र वर्ग में 22.5 षष्ट्यंश, मित्र वर्ग में 15 षष्ट्यंश, समवर्ग में 7.5 षष्ट्यंश शत्रु वर्ग में 3.75 षष्ट्यंश अतिशत्रु वर्ग में 1.875 षष्ट्यंश अंक प्रदान किए जाते हैं। सप्तवर्ग बल स्थानबल का एक घटक है। अतः स्थान बल में सप्तवर्ग बल का 11.5% का अधिकतम योगदान होता है।

द्वादशांश वर्ग से फलित विचार

द्वादशांश के प्रयोग विधि का उल्लेख मानसागरी एवं बृहज्जातकम् में विशेष रूप से किया गया है।

द्वादशांश से माता-पिता सौख्य विचार: मानसागरी के रचनाकार द्वादशांश से माता-पिता के सुख का विचार करते हैं।

द्वादशांश से स्त्री विचार: द्वादशांश में यदि ग्रह अपने मित्र राशि, स्वराशि में या उच्च राशि में स्थित हो तो बहुत स्त्रियों का अधिपति तथा विविध प्रकार की सम्पत्तियों से युक्त होता है।

ग्रहाश्चेद्द्वादशे भागे मित्रोच्चस्थसमवस्थिताः।
बहुस्त्रीस्वधिकारीस्यान्नाना-ऋद्धिसमन्वितः॥ (मान. ४५२)

मानसागरी में यवनाचार्य के मत को भी कहा है। जातकफलंनवांशेद्वादशभागेविचिन्तयेत्पत्नीम्। अर्थात नवमांश से जातक का फल, द्वादशांश से पत्नी का विचार करना चाहिए।

द्वादशांश से प्रसव का अनुमानित समय: गर्भाधान काल में चन्द्रमा जिस राशि में जिसके द्वादशांश में हो उससे उतनी ही संख्या आगे वाली राशि में चंद्रमा जब जाता है तब गर्भ संभव मास (9वे मास उपरांत)में प्रसव होता है ।
पुस्तक –बृहज्जातकम्, निषेकाध्याय (अध्याय 4)श्लोक 21

द्वादशांश से आयु: प्रथम द्वादशांश से आरंभ करते हुए विभिन्न द्वादशांश वर्ग में उत्पन्न होने वाले व्यक्तियों के आयु प्रमाण क्रम से 80, 84, 86, 77, 85, 60, 56, 70, 53, 70, 90, 66, 56, 100 वर्ष कहे गए हैं।

अशीतिचतुराशितिषडशीत्यगसप्तकम्।
अष्टौपञ्चषष्टिट्पञ्चाशच्चैव सप्ततिः॥४५३॥
नत्यांगाधिकाषष्ठिषट्पञ्चाशच्छतं तथा।
उक्तमायुःप्रमाणेनद्विरसांशैकभेदतः॥मान. ४५४॥

द्वादशांश से वियोनि जन्म विचार: प्रश्न कुण्डली अनुशीलन में द्वादशांश का विचार किया जाता है। बृहज्जातकम् के अनुसार चन्द्रमा के द्वादशांश वर्ग के अनुरूप ही वियोनि जन्म को कहा जाता है। यह विचार निम्नलिखित योग में ही किया जाता है –

1. सभी पाप ग्रह बली हों और सभी शुभ ग्रह निर्बल हों
2. बुध-शनि केन्द्र में हो तो

इस प्रकार के योग में जिस प्रकार के द्वादशांश में चन्द्रमा हो उसी प्रकार प्राणियों का स्वरूप कहना है। यदि चन्द्रमा का वर्ग) वियोनि संज्ञक राशि हो तो वियोनि का जन्म समझना। यदि चन्द्रमा द्विपद द्वादशांश में हो तो द्विपद का ही जन्म समझना।
वियोनि जन्म का तात्पर्य है थलचर, जलचर, नभचर जीव अथवा मनुष्य से भिन्न जीव। अतः मेष द्वादशांशगत चन्द्रमा से मेष नामक वियोनि का, वृष द्वादशांश में गाय बैल भैंसा, कर्क द्वादशांश में कर्कटादि, सिंह द्वादशांश में वनचर सिंह व्याघ्र हरिण श्रृगालादि का, वृश्चिक द्वादशांश में सर्प बिच्छू आदि का धनुराशि के उत्तरार्ध में घोड़े खच्चरगदहादि का, मकर पूर्वार्द्ध में हरिण आदि का मीन द्वादशांश में मछली आदि के जन्म का आदेश करना चाहिए॥१॥

द्वादशांश से भाग्य एवं स्वभाव विचार: राशि द्वादशांश गत चन्द्र द्वादशेशांदि की दृष्टि आदि से भी जातक भाग्यवान होता है। सारावली के अनुसार जातक की कर्मठता, परोपकार आदि के लक्षण का विचार द्वादशांश वर्ग से किया जाता है। द्विरसांशबलसमेतःकर्मरतंपरोपकारकं चैव॥३२॥ अर्थात द्वादशांश बल से युत ग्रह कर्मठ परोपकारी बनाता है। मेषादि द्वादश राशि के जैसे ही मेषादि द्वादशांश गत चन्द्रमा के शुभाशुभ फल कहना चाहिए। ॥ ७॥

अशुभ कुम्भ-द्वादशांश वर्ग: कुम्भ लग्न के जन्म को शुभ नहीं माना जाता है। परंतु यवनाचार्यों के मत से किसी भी लग्न में केवल कुम्भ राशि का द्वादशांश समय ही अशुभ होता है।

द्वादशांश से अरिष्ट: प्रथम द्वादशांश में उत्पन्न जातक को 18 वर्ष में जल से भय, द्वितीय में सर्प से 9वें वर्ष में, तृतीय में शत्रु से 10वें वर्ष में, चतुर्थ में राजयक्ष्मा से 32वें वर्ष में, पञ्चम् में रक्त दोष से 20वें वर्ष में, षष्ठ से अग्नि से 22वें वर्ष में, सप्तम में जलोदर से 28वें वर्ष में, अष्टम में व्याघ्र से 30वें वर्ष में, नवम में बाण से 32वें वर्ष में, दशम में जल तथा वायु से 30वें वर्ष में, एकादश में जलमें डूबने से 30वें वर्ष में तथा द्वादश में वाहन आदि के चक्र से 29वें वर्ष में भय तथा अरिष्ट की संभावना होती है।

जलेनाष्टादशेवर्षेसर्पेणनवमे पुनः।
परेणदशमेचैवद्वात्रिंशे राजयक्ष्मणा॥४५५॥
विंशेरक्तप्रकोपेणद्वाविंशेवह्निना तथा।
अष्टाविंशत्तमेवर्षेजलोदरभयं तथा॥४५६॥
व्याघ्रात्त्रिंशत्तमेवर्षेशरघातेनदन्तके।
जलेनवातपीड़ाभिर्मरणं त्रिंशदब्दके॥४५७॥
स्त्रीकन्यामरणंविद्यात्त्रिंद्वर्षेसुमज्जनात्।
चक्रेणमरणंप्रहुरूनत्रिंशेततोनरः।
पूर्वोक्तमायुःप्राप्नोतिसत्यमेतन्मयोदितम्॥मानसागरी ४५८॥

द्वादशांश में ग्रहों की स्थिति के अनुसार पूर्णायु एवं अरिष्ट चक्र

द्वादशांश	पूर्णायु	अरिष्ट काल	हेतु
1	80	18	जल
2	84	9	सर्प
3	86	10	शत्रु
4	77	32	रजयक्ष्मा
5	85	20	रक्तदोष
6	60	22	अग्नि
7	56	28	जलोदर
8	70	30	व्याघ्र
9	90	32	शर
10	66	30	जल-वात पीड़ा
11	56	30	जल से स्त्रीको भय
12	100	29	चक्र एवं चक्का

निष्कर्ष

फल कथन के समय माता पिता के सुख, वियोनि जन्म, आयु निर्णय, भाग्य, कर्मठता, परोपकार की प्रवृत्ति, अशुभ कुम्भ का विचार द्वादशांश वर्ग कुण्डली से करना चाहिए। वर्ग कुण्डली में दिखने वाले ग्रह युति, दृष्टि, भाव में ग्रहों की स्थिति, विभिन्न प्रकार के शुभाशुभ योग का विचार तर्क संगत नहीं है। ग्रह अपने मूल भाव और राशि के अन्तर्गत की अन्य क्षेत्र (वर्ग), ग्रह स्वामी, ग्रह देवता के प्रभावित हो कर फल प्रदान करते हैं।

संदर्भ

1. भारतीय कुण्डली विज्ञान, लेखक श्री मीठालाल हिंमतराम ओझा प्राध्यापक (ज्योतिषशास्त्र), प्रकाशक –वसं मीठालाल ओझा, मीरघाट, वाराणसी। वि.सं. 2018
2. बृहज्जातकम्, व्याख्याकार पं. श्री सीताराम झा, प्रकाशक – सावित्री ठाकुर प्रकाशन, वाराणसी। ई.2003
3. मानसागरी, व्याख्याकार – डॉ. रामचन्द्र पाण्डेय, कृष्णदास अकादमी, वाराणसी। वि.सं. 2040
4. सारावली, व्याख्याकार – डॉ. मुरलीधर चतुर्वेदी, मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी। ई.2013